गुरु गोरखनाथ जी

राजकीय महाविद्यालय हिसार

हिंदी
विभागीय पत्रिका

हिंदी विश्व में भारत की पहचान को सशक्त बनाने वाली भाषा है।”

राजपाल

सत्र : 2025-26

जून, 2026

हिंदी विभागीय पत्रिका

हिंदी ... साहित्य... प्रौद्योगिकी...

हिंदी समृद्ध परम्परा की अगली कड़ी

वर्ष : 02, अंक 18 , जून 2026
ज्येष्ठ| विक्रम संवत-2082

संस्थापक सम्पादक

डॉ राजपाल

सहायक सम्पादक

डॉ. राजेंद्र प्रसाद
राकेश बिदानिया,
डॉ. वीरेंद्र
डॉ. देवेंद्र सिंह सांगा

छात्र सम्पादक

नरेश कुमार,
विनय कुमार ,
कोमल, मनीषा

सम्पादकीय कार्यालय

हिंदी विभाग, गुरु गोरखनाथ जी राजकीय महाविद्यालय हिसार

9466370922, 9255451522

gchisarhindi@gmail.com
dr.rajhisari@gmail.com

एक नज़र

प्राचार्य संदेश
संपादकीय
गोरखनाथ जी का जीवन दर्शन

फ़िल्म समीक्षा
विविध
हिंदी विभाग की शैक्षणिक एवं रोजगारपरक उपलब्धियाँ
यात्रा-वृतांत
विश्व पर्यावरण दिवस
योग-चिंतन

साहित्य प्रश्नोत्तरी
शब्द-सम्पदा
विलोम शब्द
प्रशासनिक शब्दावली
पुस्तक समीक्षा

हिन्दी साहित्य विषय के प्रतियोगियों के लिए भी उपयोगी

संदेश

मेरे प्रिय विद्यार्थियों, सहयोगी प्राध्यापकों, कर्मचारी बंधुओं एवं इस महाविद्यालय परिवार के सभी सदस्यों को मेरा स्नेहिल नमन।

आज सेवानिवृत्ति के इस भावुक क्षण में मेरा हृदय कृतज्ञता से भरा है। यह सम्मान और यह यात्रा केवल मेरी नहीं, बल्कि उन सभी का आशीर्वाद और सहयोग है जिन्होंने हर कदम पर मेरा साथ दिया।

मेरे माता-पिता ने मुझे शिक्षा, संस्कार और ईमानदारी का मार्ग दिखाया। मेरी बहनों का त्याग मेरे जीवन की सबसे बड़ी पूँजी है। उन्होंने अपनी अनेक इच्छाओं का त्याग कर मुझे आगे बढ़ने का अवसर दिया। आज जो भी सम्मान मुझे मिला है, उसमें उनका सबसे बड़ा योगदान है।

मैं अपने गुरुजनों का हृदय से आभारी हूँ, जिन्होंने मुझे केवल विषय का ज्ञान ही नहीं, बल्कि एक अच्छा शिक्षक और बेहतर इंसान बनना भी सिखाया। इस महाविद्यालय में बैडमिंटन कोर्ट, ऑडिटोरियम का पुनरुद्धार, एडु ऑर्बिट पोर्टल तथा एलुमनी मीट जैसे कार्य मेरे अकेले के नहीं, बल्कि मेरे सहकर्मियों, कर्मचारियों और समाज के सामूहिक सहयोग का परिणाम हैं।

यह परिसर मेरे लिए केवल कार्यस्थल नहीं, बल्कि दूसरा घर रहा है। यहाँ बिताया हर पल, विद्यार्थियों की मुस्कान, सहकर्मियों का स्नेह और साथ मिलकर किए गए कार्य मेरी सबसे अनमोल स्मृतियाँ हैं।

आज मैं संतोष के साथ विदा ले रहा हूँ। मेरी कामना है कि यह महाविद्यालय ज्ञान, संस्कृति, खेल और मानवीय मूल्यों का प्रकाश फैलाता रहे। मुझे भले ही याद रखें या न रखें, पर इस संस्थान की प्रगति कभी न रुकने दें।

प्राचार्य
डॉ विवेक कुमार सैनी

संपादकीय

सेवानिवृत्ति के इस पड़ाव पर, एक युग का अंत और एक प्रेरणा का शाश्वत आरंभ

यह अंक हमारे महाविद्यालय के इतिहास का एक विशेष अध्याय है। यह केवल एक सेवानिवृत्ति का समाचार नहीं, बल्कि एक ऐसे युग के समापन का दस्तावेज़ है, जिसने इस परिसर को नई ऊँचाइयाँ प्रदान कीं। हमारे प्रिय प्राचार्य, डॉ. विवेक सैनी, इस महाविद्यालय की रीढ़ रहे हैं। उनके नेतृत्व में यह संस्थान न केवल शिक्षा का केंद्र बना, बल्कि संस्कार, संगीत, खेल और डिजिटल नवाचार का एक समग्र मंच भी बना।

डॉ. सैनी ने अपने कार्यकाल में जंतु विज्ञान के अध्यापन को एक कला का रूप दिया। उनके द्वारा बनाए गए सुंदर चित्रों ने हर विद्यार्थी के मन को आनंदित किया। उनका मार्गदर्शन युवाओं के लिए एक दीपक के समान रहा, जिसने उनके कैरियर को नई उड़ान दी। वे केवल एक शिक्षक नहीं, बल्कि एक कर्मयोगी थे—जिन्होंने सदाचार, समर्पण और सेवा को अपने जीवन का आदर्श बनाया।

उनकी बहुआयामी प्रतिभा ने इस परिसर को एक जीवंत संग्रहालय बना दिया। जब वे सैक्सोफोन हाथों में लेते, तो मधुर धुनों के झरने से सभी मंत्रमुग्ध हो जाते। संगीत और संवेदना का यह संगम उनकी पहचान थी। उन्होंने एलुमनी मीट के माध्यम से पूर्व छात्रों को पुनः जोड़ा, खेल प्रेमियों के लिए बैडमिंटन कोर्ट बनवाकर उनका मान रखा, और एडु ऑर्बिट पोर्टल लॉन्च करके डिजिटल नवाचार का मार्ग प्रशस्त किया।

उन्होंने जर्जर सपनों को नव आकार दिया। ऑडिटोरियम का पुनरुद्धार होना, कौशल और रोजगार के नए अवसरों का सृजन होना—यह सब उन्हीं के संकल्पों का परिणाम था। महाविद्यालय के कुलगीत के माध्यम से उन्होंने हम सभी को एक सूत्र में पिरोया।

वे विशाल वट वृक्ष की छाया के समान थे—जिन्होंने हर चिंताग्रस्त मन को आश्रय दिया। उनके हृदय में निर्मलता और चेहरे पर सहज मुस्कान हम सभी के लिए प्रेरणा रहेगी।

आज जब वे इस परिसर से विदा ले रहे हैं, तो ये गलियारे, ये कक्षाएं और ये वृक्ष उन्हें पहचानते हैं। कल जब वे अतिथि बनकर आएंगे, तो हर दीवार, हर चेहरा और हर पत्ता उनका आभार मानेगा।

यह सेवानिवृत्ति का पल नई दिशा का द्वार है। हम प्रार्थना करते हैं कि उनका आगामी जीवन स्वास्थ्य, सुख और शांति से परिपूर्ण हो। सदियों तक उनका नाम अमर रहेगा।

डॉ. विवेक सैनी, आप इस परिसर की धड़कन रहे हैं। आपका यशगान सदैव गूंजता रहेगा।

संपादक

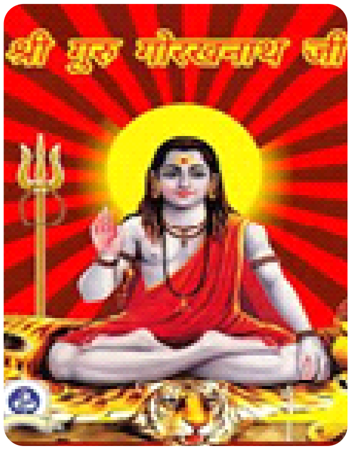

गोरखनाथ जी का जीवन दर्शन

गतांक से आगे....

५-१६ प्रमदास

प्रमदास ने अपनी रचना 'सिध बंदना' में -
'नमो नमो निरंजन भरम को बिहंडन I नमो गुरदेवं अगम पंथ भेवं II८
द्वारा गुरू का स्मरण कर आदि नाथ, मछिन्द्र, गोरखनाथ से लेकर कबीर, कमालदास और ध्रुव, प्रहलाद भक्त तक की वंदना की है तथा अपनी इस 'बंदना' के महत्त्व के प्रतिपादन के लिए कहा है-

सिष साधनै बंदना, नितिप्रति करै जो संत I प्रेम कहै सहजही, दरसै जोति अनंत ।।*

५-१७ शंकराचार्य
शंकराचार्य के द्वारा रचित 'दत्त असतोत्र' में जटा जूट से विभूषित दिगम्बर दत्ते के स्वरूप वर्णन" के अतिरिक्त अल्पभाषण, अल्प निद्रा, अल्प भोजन, सत्य, शील और संतोष धारण के महत्त्व की विवेचना की गयी है। इनका कथन है-

अलिप बक्ता सुलिप निद्रा, भोजन सुष संजमं I सत सील संतोष धारण, सुमरिणं सत सुमरणं I **
तथा
५-१८ सतो काणेरी (काणेरी पाव)

१५४ इन के रचित पदों में मन साधन, विषय वासनाओं से लिप्त व्यक्ति योगी नहीं हो सकता, समय व्यतीत हो जाने पर पछताना पड़ता है आदि योगपरक तथा आचरण सम्बन्धी उपदेश दिए गए हैं। इनका कथन है--

बिन परषै योगी न होसी रावल क्योंकि जैसे- 'भूस कूटया क्यू' निकसै चावल', वैसे ही-बिन परचे जोग बरवाणे धंध I

५-१६ धूधलीमल
इन्हें धर्मनाथ के नाम से भी जाना जाता है I इन्होंने कच्छ तथा निकटवर्ती प्रदेशों में नाथ-सम्प्रदाय का विशेष प्रचार किया था। इनकी रचनाओं का संकलन डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी ने 'नाथ सिद्धों की बानियां' नामक संग्रह में किया है। इनकी रचनाओं में 'नाथ निरंजन' को प्राप्त करने में ही जीवन की सफलता मानी गयी है। इन्होंने 'पवन' की साधना द्वारा समस्त 'मायाजाल' को नष्ट कर योगी का निरंतर योग साधना में लीन रहना बताया है। क्योंकि इस दशा में 'काल व्याल' का भय नहीं व्यापता I अपनी रचनाओं इन्होंने योग साधना को ही विशेष महत्त्व दिया है।

५-२० हणवंतजी
इन्हें नाथ सम्प्रदाय की धजपंथ नामक शाखा का प्रवर्तक कहा जाता है। इन्हें वक्रनाथ भी कहते हैं। इनके रचित दो पद एवं सबदियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं जिनसे भी इनके विषय में कुछ तथ्य ज्ञात होते हैं। जिनके अनुसार ये बालजती थे I इन्होंने अपने पद में नारियों के वासनात्मक स्वरूप के विरुद्ध अपना मत प्रकट किया है। एक पद में इन्होंने परमतत्व को 'निराकार आकार विवरजित' तथा 'बाहरि भीतरि श्रव निर तरि' बतलाया है। उसे इन्होंने नादरूप बताते हुए पुष्पगंध (पहुपवासना) के समान सर्वत्र व्याप्त होते हुए भी प्रत्यक्ष न दिखाई देने वाला बताया है। इनके अनुसार परमतत्त्व को केवल वही जान सकता है जो उसे पहचानता है। केवल वर्णन के द्वारा उस परमतत्त्व को को नहीं जाना जा सकता है। इन्होंने शरीर रूपी घर में ही अठसठ तीरथों का निवास माना है। ये सांसारिक लोकाचार को व्यर्थ मानते हैं।

इनके विचार में गुरू के उपदेश से ही चंचल मन को स्थिर करने से परमतत्व रूपी ज्योति के दर्शन होते हैं। इनकी रचनाओं का परवर्ती संतों को रचनाओं पर बहुत प्रभाव पड़ा है । नारी को इन्होंने बाघणि कहा है जो नौ नाड़ियों का शोषण करती है। उसकी सुन्दर काया मोहित कर लेती है तथा जीवन भौर बिंदु का शोषण कर लेती है। वह जीवन मार्ग में अचानक आक्रमण कर व्यक्ति के जीवन-धन को लूट लेती है । इस प्रकार से नारी साधक को विपरीत दशा में ले जाती है।* लषमण नाम से रचित एक पद में इन्होंने स्वयं को पहचानने तथा जो ब्रह्माण्ड में है वही पिंड है का वर्णन किया है ।"

५.२१ परवत सिद्ध अथवा पारबती जी
इनकी सबदियों का स्वर उपदेशात्मक है जिसमें पवन-साधना, काग दृष्टि, सहज रहणि, अल्प भोजन आदि को योगी के लिए आवश्यक बताया गया है। १९५१ नारी से दूर रहने का इन्होंने भी, अन्य नाथ योगियों के समान, उपदेश दिया है।

इनका कथन है -

धन जोबन की करे न आस, चित न राषै कामणि पास । ५२

इनके द्वारा रचित 'भूगोल पुराण' में आकाश, वायु, तेज, ब्रह्मांड की उत्पत्ति पर प्रकाश डाला गया है१५३ तथा पृथ्वी, वैकुठ, कैलाश पर्वत, जंबू द्वीप, विविध सागरों, पृथ्वी की स्थिति, अमृतपुरी, देवताओं की श्रेणियों, कृष्णलोक, निरंकार लोक और श्रीनारायण के निवास स्थान का वर्णन किया गया है। ५४ जहां श्री नारायण निवास करते हैं उस स्थान का वर्णन करते हुए परवत सिद्ध ने लिखा है :-

'तहां श्री नारायण बैठे हैं। पउणु सरूपा बसते हैं। देवते रछिया करते हैं । शब्द सुनते हैं। परू अखों देखते न हैं। अमीजल अंचवाते हैं। तहाँ गति कउन पावते हैं। अकालमधि अखंड मूरति हैं । १५५

'भूगोल पुराण' हिन्दी गद्य साहित्य की प्रारंभिक रचनाओं की प्रतिनिधि रचना कही जा सकती है ।

गुरु गोरखनाथ के पद

कहा बूझै अवधू राई, गगन न धरनीं। चंदन सूर दिवस नहीं रैनी ॥ टेक ॥ ऊँकार निराकार सूछिम न अस्थूलं, पेड़ न पत्र फलै नहीं फूलं । डाल न मूल न बृच्छ न बेला, साखी न सबद गुरु नहीं चेला। ग्यानें न ध्यानें जोगे न जुक्ता, पापे न पुंये मोखे न मुक्ता । उपजै न बिनसै आवै न जाई, जुरा न मरण वाकै बाप न माई। भणत गोरखनाथ मछिंद्र नां दासा, भाव भगति आस न पासा ।।

हे अवधू ! क्या तुम ब्रह्म के विषय में जानना चाहते हो ?
वह ब्रह्म न आकाश है, न पृथ्वी है, न चन्द्र है न सूर्य है, न रात है और न दिन है, वह इन सबसे परे है। वह निराकार ब्रह्म न सूक्ष्म है, न स्थूल है। वह ब्रह्म किसी पेड़, पत्ते, फल, फूल डाली, जड़, वृक्ष या बेल में भी नहीं है। वह साखी, सबदी, गुरु या शिष्य में नहीं मिलता। उसे ज्ञान, ध्यान, योग, मुक्ति, पाप, पुण्य, मोक्ष और मुक्त रूपों में देख पाना सम्भव नहीं। वह ब्रह्म न जन्म लेता है, न मरता है। उसका कहीं आवागमन भी नहीं। उसमें बुढ़ापा व मृत्यु नहीं होते। उसके माँ-बाप भी नहीं। मछन्दर का शिष्य गोरख कहता है कि वह भावात्मक भक्ति की आशा के समीप भी नहीं है।

फ़िल्म समीक्षा : गुनाहों का देवता

गुनाहों का देवता

1967 में बनी फिल्म "गुनाहों का देवता" धर्मवीर भारती के चर्चित उपन्यास पर आधारित न होकर एक मौलिक कथा है, जो अपने समय की सामाजिक विसंगतियों को एक मार्मिक प्रेम-त्रिकोण के माध्यम से पेश करती है। देवी शर्मा के निर्देशन में बनी इस फिल्म की सबसे बड़ी ताकत इसका मार्मिक कथानक और प्रभावशाली अभिनय है।

कहानी कुंदन (जितेंद्र) नाम के एक भटके हुए, पर स्वर्ण-हृदयी व्यक्ति के इर्द-गिर्द घूमती है। वह सूदखोर लाला हुकुमत राय (जीवन) से कर्जदार है। एक झगड़े के दौरान उसकी मुलाकात तेज-तर्रार लड़की केसर (राजश्री) से होती है और वह उसके प्यार में पड़ जाता है। जब वह शादी का प्रस्ताव भेजता है, तो उसके आवारा स्वभाव के कारण केसर के परिवार को झटका लगता है। इसी बीच, लाला की भी केसर पर बुरी नजर होती है। शादी से ठीक पहले कुंदन केसर को बचाता है और मजबूरी में वे पति-पत्नी बनने का नाटक करते हैं। कुंदन को पता चलता है कि केसर पहले से किसी और से प्यार करती है, फिर भी वह उसकी रक्षा करने का वचन देता है। केसर कुंदन को सुधारने की कोशिश करती है, लेकिन दुर्भाग्यवश उसकी आंखों की रोशनी चली जाती है। अपनी स्थिति से समझौता करने के बजाय, कुंदन अपना घर गिरवी रखकर उसकी आंखों की रोशनी वापस लाता है। प्रेम, त्याग और आत्म-बलिदान की यह गाथा फिल्म के केंद्र में है।

जितेंद्र ने कुंदन के द्वंद्व—बाहरी आवारापन और भीतरी संवेदनशीलता—को बखूबी निभाया है। राजश्री ने केसर की मासूमियत और मजबूती दोनों को प्रभावी ढंग से पेश किया है। मेहमूद और जीवन जैसे कलाकारों ने सहायक भूमिकाओं में फिल्म को मजबूती दी है।

फिल्म का संगीत शंकर-जयकिशन की जोड़ी ने दिया है, जो उस युग की सबसे सफल जोड़ियों में से एक थी। उनके गीतों ने फिल्म के भावनात्मक पहलू को और गहरा किया है। देवी शर्मा के निर्देशन ने कहानी को सरलता और प्रभावशीलता के साथ पर्दे पर उतारा है। 150 मिनट की यह फिल्म अपनी ड्रामेटिक कहानी के बावजूद दर्शकों को बांधे रखती है। आलोचनात्मक रूप से, फिल्म की कहानी पारंपरिक जरूर है, लेकिन अपने भावनात्मक प्रभाव और प्रेम व बलिदान के सार्वभौमिक संदेश के कारण यह आज भी प्रासंगिक लगती है। यह फिल्म उन लोगों के लिए विशेष है जो क्लासिक युग की सिनेमाई कहानियों में रुचि रखते हैं।

राजकीय महाविद्यालय, हिसार

हिन्दी स्नातकोत्तर प्रथम वर्ष के होनहार सितारे

योगिता (97.50%)	काफी (95%)	किरण (91.70%)	कोमल (90.80%)	रूपेश (89.20%)	नरेश सिंह (89.20%)
आरज़ू (89.20%)	पुष्पा देवी (88.30%)	सुमिस्ता (88.30%)	अंजली (88.30%)	मुस्कान (87.50%)	सोनिया (87.50%)
निशा रानी (85.80%)	रवीना (85%)	कामिनी (84.20%)	वर्षा देवी (84.20%)	सकीना (84.20%)	रीतू (84.20%)
पुष्पा (84.20)%	कीर्ति (84.20%)	पल्लवी (83.30%)	सुदेश (83.30%)	अंजू बाला (83.30%)	प्रियंका (83.30%)
विनय कुमार (82.50%)	अनू (82.50)%	भतेरी (80.80%)	मीनू (80%)	दीपक (80%)	लक्ष्मी (80%)

ENGISH PHRASES WORDS

1. Hang in there: Hang in there, everything will be okay.
2. No worries: No worries, I can help you.
3. Good for you: You got the job? Good for you!
4. You bet: “Will you come?” “You bet!”
5. Why not?: Let’s go for a walk. Why not?
6. So far, so good: How’s your new job? So far, so good.
7. Never mind: Never mind, it was just a mistake.
8. Go for it: If it’s your dream, go for it.
9. That’s enough: That’s enough for today.
10. Here you go: Here you go, this is your coffee.
11. Take care: Take care on your way home.
12. My pleasure: “It was really helpful.” “My pleasure.”
13. Sounds good: Your plan sounds good to me.
14. Not at all: “Thank you!” “Not at all.”
15. I’m in: You’re going hiking? I’m in!
16. Count me in: If you’re going to the movie, count me in.
17. Hold on: Hold on, I’ll be back in a minute.
18. Come on: Come on, we’re getting late.
19. It depends: Will you join us tomorrow? It depends.
20. That’s it: That’s it! We’ve completed the project.

मंदिरों की घाटी से झीलों की नगरी तक : हमारी पाँच दिवसीय राजस्थान अनुभूति (24 से 28 तारीख, सालासर से उदयपुर तक)

किसी भी यात्रा का आरम्भ चार पहियों के घर्षण से नहीं, अपितु उस अदृश्य उत्साह की थिरकन से होता है, जो रात-भर नेत्रों में नींद नहीं आने देता और हृदय को उत्कंठा के आँचल में बाँध लेता है। 24 तारीख की प्रभात बेला, जब सूर्य ने अपनी स्वर्णिम किरणें धरती पर बिखेरीं, तभी हमारी निजी वाहिनी राजस्थान की ओर रवाना हो गई। इस आनन्द-यात्रा के सहयात्री थे—मेरे दोनों नन्हें रत्न, गर्वित और वंशिका, जिनके विशाल नेत्रों में दुर्गों के दीदार की जिज्ञासा नृत्य कर रही थी; मेरे साला, जो इस सम्पूर्ण योजना के कर्णधार थे; उनकी अर्धांगिनी, और हमारी प्यारी कनिष्का—जिसने मार्ग-भर अपनी मधुर वाचालता से वातावरण को रसीला बनाए रखा। मानो परिवार का यह हरा-भरा उपवन सम्पूर्ण राजस्थान को अपने आलिंगन में समेटने उतर आया हो।

---

24 तारीख (प्रथम दिवस) : सालासर और खाटू श्याम — भक्तिरस के ज्वार-भाटे

प्रथम पड़ाव था—सालासर बालाजी। ऐसा अनुभव हुआ, मानो स्वयं मारुतिनन्दन ने हमें दूर से ही पुकारा हो। भक्तों का वह जनसमुद्र, वायु में गूँजते जयकारों की गर्जना, और बूँदी-लड्डुओं की सुगन्धित परछाई—सब मिलकर ऐसा दिव्य वातावरण रच गया, जैसे भक्ति ने अपने ही रंग में हमें डुबो दिया हो। गर्वित ने प्रभु चरणों में अपनी भावनाएँ अर्पित कर दीं, तो वंशिका ने मूर्ति के समक्ष नेत्र मूँद ऐसी अलौकिक साधना दिखाई कि मन सहम-सा गया। साला ने पण्डित जी से सम्पूर्ण अनुष्ठान कराया, और उनकी धर्मपत्नी ने खूब प्रसाद वितरित किया। वंशिका ने मंदिर की वास्तुशिल्पीय कलाकृति की प्रशंसा करते हुए अपने फ़ाइन आर्ट विषय के साथ उसका सामंजस्य बताया—जो उसकी कलादृष्टि का प्रमाण था।
तत्पश्चात हम खाटू श्याम के पावन धाम पहुँचे। यहाँ का वह अद्भुत श्यामल रंग मानो सारी विश्वबन्धुता को एक सूत्र में पिरो रहा था। ज्यों ही खाटू नरेश के दर्शन किए, त्यों ही हृदय एक अपूर्व शान्ति से प्लावित हो उठा। वंशिका की अठखेलियाँ और भी निखर उठीं—उसने कहा— "पापा, प्रभु की यह मुस्कान तो गर्वित भैया की मुस्कान से भी मिलती-जुलती है!" —इस हास्य-रस में ही हमने साला-साली के साथ प्रसाद और भोजन का आनन्द लिया और रात्रि-विश्राम के लिए गुलाबी नगरी जयपुर की ओर प्रस्थान किया।

---

25 तारीख (द्वितीय दिवस) : गुलाबी नगरी जयपुर — इतिहास की गोद में प्रभात

जयपुर की उस गुलाबी सुबह ने, जो ईंटों में नहीं, अपितु वहाँ की मिट्टी में समायी है, हमें नवजीवन दिया। सबसे पहले हमने आमेर (अम्बर) का किला देखा। वहाँ की हाथी-सवारी ने गर्वित को राजकुमार बना दिया, और वंशिका ने पीछे बैठी कनिष्का को हाथी की चाल-ढाल की रोचक कथा सुनाई। मेरे साले ने किले की दीवारों पर अंकित चित्र-विधानों और दर्पणों के इतिहास को इतने रसभरे अन्दाज़ में समझाया कि उनकी पत्नी बरबस बोल उठीं— "बस अब यहीं रुक जाएँ, लगता है मानो कोई चित्रपट का सेट हो!"
तत्पश्चात हवा महल के झरोखों ने हमें अपनी अद्भुत वायु-विन्यास की कला से चकित कर दिया। बारिश ने भी साथ न छोड़ा और जल महल का दिदार हुआ। पानी की कल-कल करती लहरें मानो अपनी बाँहें फैलाकर हमारा स्वागत कर रही थीं। सन्ध्या को हम जयपुर के रंग-बिरंगे बाज़ार में खो गए—वंशिका को लच्छेदार दुपट्टे का रिझान हुआ, गर्वित को जयपुरी शाही इत्र की खनक भाई, और कनिष्का वहाँ की कुरती देखकर मोहित हो गई। रात्रि-भोजन में दाल-बाटी-चूरमा भले ही अनुपलब्ध रहा, परन्तु उसके स्थान पर मिले अन्य व्यञ्जनों ने सबको एक-दूसरे की थाली में मुँह डालने पर बाध्य कर दिया। मेरे साले ने व्यंग्य-विनोद करते हुए कहा— "यहाँ के भोजन में तो वज़न बढ़ाने की सरकारी गारंटी है!"

26 तारीख (तृतीय दिवस) : अजमेर की सूफ़ी बयार और पुष्कर की पावन-निर्झरी

तृतीय प्रभात हमें अजमेर शरीफ़ ले गया। ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की दरगाह का वह दृश्य अद्भुत था—सुगन्धित पुष्प, श्रद्धा से लिपटी चादरें, और सूफ़ियों की वह मधुर धुन जो आत्मा के तार छेड़ जाती है। कनिष्का और वंशिका ने श्वेत संगमरमर पर बैठ, मौन साधना सी कर, मन-ही-मन दुआएँ माँगीं। गर्वित ने उस विशालता को देखकर भोलेपन से कहा— "यह मज़ार तो बहुत बड़ा है!" —हम सबके होंठों पर मन्द मुस्कान तैर गई।

दोपहरोपरांत हम पुष्कर के पवित्र तट पर उतरे। झील के किनारे ज्यों ही पैर धरा, त्यों ही मानो शरीर की सारी थकान उस सरोवर की शीतल सरस्वती में विलीन हो गई। ब्रह्मा जी के एकमात्र मन्दिर के दीदार करते ही साले बेहद भावुक हो उठे—यह भारत का वह अद्वितीय धाम है, जहाँ विधाता स्वयं विराजमान हैं। हमने घाटों पर बैठ, संध्या आरती का वह अलौकिक दृश्य निहारा। जब दीप-मालाएँ पावन जल में तैरने लगीं, तो वंशिका के विस्मित नेत्र उस दृश्य को पीने लगे। इसी अवसर पर कनिष्ठा फिसलकर गिर पड़ी और देर तक विलाप करती रही—पर पुष्कर की वात्सल्यमयी माटी ने उसके अश्रु-बिन्दुओं को अपने में समा लिया। मेरी साली ने सबके ललाट पर पुष्कर की उस सिन्दूरी लाल मिट्टी का तिलक लगाया, मानो सम्पूर्ण यात्रा की रक्षा की देवी से प्रार्थना कर रही हों।

---

27 तारीख (चतुर्थ दिवस) : झीलों की नगरी उदयपुर — जहाँ जल में अमरत्व बोलता है

चतुर्थ प्रभात की किरणें ज्यों ही पिछोला झील पर पड़ीं, त्यों ही लगा मानो सहस्रों माणिक्य और हीरे जलतल पर बिखर गए हों। हमने सिटी पैलेस का अवलोकन किया—उसके चकाचौंध दर्पण, झालरदार झूमर, और संगमरमर की बेल-बूटियों ने वंशिका और कनिष्का दोनों को फोटो-चित्रण के ऐसे जादू में बाँध लिया कि वे विश्व-विस्मृति सी हो गईं। गर्वित को वहाँ की रेल-विहार इतनी भायी कि वह जग मन्दिर का नाम ही भूल गया था।

दोपहर में हम सभी ने पिछोला के नीर-विहार का आनन्द लिया और जग मन्दिर के समक्ष उस अद्भुत सेल्फी को कैद किया—जिसमें मैं, मेरे साला, उनकी पत्नी, कनिष्का, गर्वित और वंशिका—सब एक मुस्कान में समाहित थे। सन्ध्या को हम सहेलियों की बाड़ी गए; वहाँ गर्वित ने वंशिका को पाषाण की चम्पक-पुष्प दिखाई, तो कनिष्का ने फव्वारों के झरनों में खेल-कूद कर सारी मस्ती लूट ली।

रात्रि को झील-तट पर एक सुहावने छत पर बैठ, हमने मेवाड़ी भोजन का स्वाद चखा और तारों की छाँह में बैठ पूरे कुटुम्ब ने यह निर्णय लिया—आगामी अन्तिम दिन कुछ अविस्मरणीय होना चाहिए।

---

28 तारीख (पंचम एवं अन्तिम दिवस) : विदाई, परन्तु विरह नहीं

अन्तिम प्रभात हमने फतेह सागर के तट पर विहार किया। गर्वित और वंशिका ने सीगल (जल-पक्षियों) को दाना डालकर एक अमर दृश्य रच दिया, तो कनिष्का ने उस क्षण को अपने यन्त्र में बन्द कर लिया। साले ने गम्भीर स्वर में कहा— "यह यात्रा समाप्त नहीं होती, अपितु अगली यात्रा का बीजारोपण करती है।" उनकी अर्धांगिनी ने हम सबके ललाट पर हल्दी-चूना लगाकर 'पुनर्मिलन' का पावन वचन दिलवाया।

जब हमारी वाहिनी वापसी-पथ पर अग्रसर हुई, तो हर कोई शारीरिक रूप से कुछ शिथिल अवश्य था, परन्तु नेत्रों में वह अपूर्व चमक थी—जो केवल सुसंगत परिवार और दिव्य स्थलों के सुमधुर सङ्गम से उत्पन्न होती है। सालासर का सिन्दूर, खाटू की अठखेली, जयपुर का स्वर्णिम गौरव, अजमेर की आध्यात्मिकता, पुष्कर की पावनता, और उदयपुर की जल-श्री—ये सब अब हमारी स्मृतियों के मन्दिर में अनन्त रत्न बनकर स्थापित हो गए हैं।

उपसंहार : पाषाण नहीं, पल जो महत्वपूर्ण हैं

इस आत्म-यात्रा ने मुझे स्पष्ट कर दिया कि दुर्ग और सरोवर भले ही अपूर्व सुन्दर हैं, पर उन्हें सार्थकता और सौन्दर्य प्रदान करने वाले वे हैं, जो कन्धे से कन्धा मिलाकर साथ चलते हैं। मेरे बच्चे गर्वित और वंशिका निरन्तर उल्लसित रहे, कनिष्का ने प्रत्येक पल को छवि-बद्ध करती रही, और हम सबने एक ऐसे अटूट स्नेह-बन्धन को पुनः जीया, जो न तो समय की रेखाओं में बँधता है और न ही दूरियों की माप में।

यह यात्रा समाप्त हुई, पर राजस्थान हमारे अन्तर-मन में बस गया—उसके खण्डहर, उसके मन्दिर, उसकी धूल, और सबसे बढ़कर, उसके लोगों की मुस्कान। सचमुच, यह सफर केवल स्थानों का नहीं, अपितु भावनाओं का भी था—जो हृदय की किताब में स्वर्णाक्षरों में अंकित है।

विश्व पर्यावरण दिवस : केवल एक दिवस नहीं, बल्कि जीवन का संकल्प

प्रत्येक वर्ष 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस मनाया जाता है। यह दिवस हमें प्रकृति के प्रति हमारे कर्तव्यों का स्मरण कराता है। आज मानव ने विज्ञान और तकनीक में अभूतपूर्व प्रगति की है, किंतु इसकी कीमत प्रकृति को चुकानी पड़ रही है—जंगल घट रहे हैं, नदियाँ प्रदूषित हो रही हैं, वायु विषैली होती जा रही है और पृथ्वी का तापमान निरंतर बढ़ रहा है। ऐसे समय में इस दिवस का महत्व और भी बढ़ जाता है।

विश्व पर्यावरण दिवस का इतिहास 1972 में स्वीडन के स्टॉकहोम में आयोजित मानव पर्यावरण सम्मेलन से जुड़ा है। इस सम्मेलन में विश्व के अनेक देशों ने सहभागिता की और पहली बार वैश्विक स्तर पर यह स्वीकार किया गया कि पर्यावरण संरक्षण पूरी मानवता की साझा जिम्मेदारी है। इसी के परिणामस्वरूप संयुक्त राष्ट्र ने 1973 से प्रतिवर्ष 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस मनाने का निर्णय लिया। तब से यह दिवस विश्व का सबसे बड़ा पर्यावरण जागरूकता अभियान बन चुका है।

पर्यावरण केवल पेड़-पौधों तक सीमित नहीं, बल्कि वायु, जल, भूमि, वन, नदियाँ, पर्वत, समुद्र और समस्त प्राकृतिक संसाधन इसके अंग हैं। मानव जीवन इन सभी तत्वों पर आश्रित है—शुद्ध वायु, स्वच्छ जल और उपजाऊ भूमि के बिना जीवन संभव नहीं। इसलिए पर्यावरण की सुरक्षा वास्तव में मानव जीवन की सुरक्षा है।

वर्तमान में पर्यावरण गंभीर चुनौतियों से घिरा है। जलवायु परिवर्तन सबसे बड़ी समस्या बन गया है—ग्लेशियर पिघल रहे हैं, समुद्र जलस्तर बढ़ रहा है, अत्यधिक वर्षा व भीषण सूखा जैसी घटनाएँ बढ़ी हैं। वायु प्रदूषण से नगरों में धुआँ जीवन के लिए खतरा बन गया है। जल प्रदूषण ने नदियों की गुणवत्ता नष्ट कर दी है और अनेक क्षेत्रों में स्वच्छ पेयजल दुर्लभ हो रहा है। प्लास्टिक प्रदूषण ने नई चुनौती दी है—एक बार उपयोग होने वाला प्लास्टिक सदियों तक नष्ट नहीं होता, यह मिट्टी, जल स्रोतों और जलीय जीवन के लिए घातक है।

पर्यावरण दिवस का वास्तविक उद्देश्य केवल जागरूकता नहीं, बल्कि व्यवहारिक परिवर्तन है। प्रायः इस दिन पौधारोपण, भाषण और आयोजन होते हैं, किंतु अगले दिन सब सामान्य हो जाता है। यदि यह दिवस केवल औपचारिकता रह गया तो इसका उद्देश्य पूरा नहीं होगा। हमें पौधे लगाने के साथ उनकी देखभाल का संकल्प लेना होगा—एक विकसित वृक्ष हजारों लोगों को शुद्ध वायु दे सकता है।

हमें अपनी आदतों की समीक्षा करनी चाहिए—प्लास्टिक कम करें, कपड़े या जूट के थैले उपयोग करें, जल व बिजली की बचत करें। बच्चों को पर्यावरण के प्रति संवेदनशील बनाना आवश्यक है, विद्यालयों में पर्यावरण शिक्षा को व्यावहारिक गतिविधियों से जोड़ना चाहिए।

पर्यावरण संरक्षण केवल सरकारों की जिम्मेदारी नहीं है। सरकारें नीतियाँ बना सकती हैं, किंतु जब तक आम नागरिक सहयोग नहीं करेंगे, अपेक्षित परिणाम नहीं मिलेंगे। जब करोड़ों लोग छोटी-छोटी जिम्मेदारियाँ निभाएंगे, तभी बड़ा परिवर्तन संभव है।

आवश्यकता विकास और पर्यावरण के बीच संतुलन स्थापित करने की है। ऐसा विकास जो प्रकृति को नष्ट करे, अंततः मानवता के लिए हानिकारक होगा। स्वच्छ ऊर्जा, जल संरक्षण, हरित प्रौद्योगिकी और सतत विकास इस दिशा में महत्वपूर्ण कदम हैं।

विश्व पर्यावरण दिवस का सबसे बड़ा संदेश—पृथ्वी केवल वर्तमान पीढ़ी की संपत्ति नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों की धरोहर है। यदि हम आज पर्यावरण की रक्षा नहीं करेंगे, तो भविष्य को स्वच्छ वायु, जल और स्वस्थ जीवन नहीं मिल पाएगा। पर्यावरण संरक्षण केवल सामाजिक दायित्व नहीं, नैतिक जिम्मेदारी भी है।

5 जून हमें उत्सव से अधिक उत्तरदायित्व का संदेश देता है। प्रकृति के बिना मानव सभ्यता का अस्तित्व संभव नहीं। हमें एक दिन के कार्यक्रमों से आगे बढ़कर समूचे वर्ष पर्यावरण संरक्षण को जीवन का हिस्सा बनाना होगा। जब हम अपने व्यवहार, आदतों और सोच में प्रकृति के प्रति सम्मान विकसित करेंगे, तभी इस दिवस का वास्तविक उद्देश्य पूरा होगा। पृथ्वी ने हमें जीवन दिया है, अब हमारी जिम्मेदारी है कि हम उसकी रक्षा करें—यही पर्यावरण दिवस का सबसे बड़ा संदेश और मानवता के सुरक्षित भविष्य की सबसे मजबूत नींव है।

डॉ राजपाल

योग : शरीर, शांति और चेतना का शाश्वत संगम

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस 2026 के अवसर पर विश्व के करोड़ों लोग योग के माध्यम से स्वास्थ्य, संतुलन और आत्मिक शांति का उत्सव मनाने को तत्पर हैं। यह अवसर केवल एक वार्षिक आयोजन नहीं, बल्कि मानवता को भारत की उस अमूल्य धरोहर का स्मरण कराने का क्षण है, जिसने सहस्राब्दियों से शरीर, मन और चेतना के बीच संतुलन स्थापित करने का मार्ग दिखाया है। आज जब आधुनिक जीवन सुविधाओं के साथ-साथ तनाव, अवसाद, असंतुलित जीवन-शैली और जीवन-शैली-जनित रोगों की चुनौतियाँ भी लेकर आया है, योग पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक हो गया है। यह केवल व्यायाम नहीं, न ही शरीर को लचीला बनाने की तकनीक; योग वास्तव में जीवन को समग्रता में जीने की पद्धति है, जो व्यक्ति को स्वयं से, समाज से और प्रकृति से जोड़ती है।

योग की यात्रा जितनी प्राचीन है, उतनी ही प्रेरणादायक भी। वेदों, उपनिषदों, महाभारत, भगवद्गीता तथा विभिन्न दार्शनिक परंपराओं में योग का उल्लेख मिलता है। संस्कृत धातु 'युज्' से बना 'योग' शब्द का अर्थ है—जोड़ना या एकत्व स्थापित करना। शरीर और मन का, मन और बुद्धि का, व्यक्ति और प्रकृति का तथा अंततः आत्मा और परम चेतना का समन्वय ही योग का मूल भाव है। भारतीय मनीषियों ने योग को केवल शारीरिक स्वास्थ्य का साधन नहीं, बल्कि आत्म-विकास और आत्म-साक्षात्कार का मार्ग माना। महर्षि पतंजलि ने योगसूत्रों के माध्यम से इसे एक सुव्यवस्थित दर्शन के रूप में स्थापित किया। भारत में योग सदियों तक आश्रमों, गुरुकुलों और आध्यात्मिक परंपराओं का अभिन्न अंग रहा।

योग की वैश्विक स्वीकृति का महत्वपूर्ण पड़ाव तब आया जब संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 11 दिसंबर, 2014 को सर्वसम्मति से 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस घोषित किया। 2015 से यह दिवस पूरे विश्व में मनाया जाने लगा। 21 जून का विशेष महत्व है—यह उत्तरी गोलार्ध का सबसे लंबा दिन है, जिसे ग्रीष्म अयनांत कहते हैं। भारतीय योग परंपरा में यह दिन ऊर्जा, संतुलन और आध्यात्मिक उन्नति का प्रतीक है।

योग की सबसे बड़ी विशेषता उसका बहुआयामी स्वरूप है। यह शरीर, मन और आत्मा तीनों के विकास की बात करता है। आधुनिक चिकित्सा विज्ञान स्वीकार कर रहा है कि अनेक शारीरिक और मानसिक समस्याओं के समाधान में योग सहायक है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने भी योग को स्वास्थ्य और कल्याण को प्रोत्साहित करने वाली महत्वपूर्ण पद्धति बताया है।

योग का महत्व केवल व्यक्तिगत स्वास्थ्य तक सीमित नहीं है। आज पूरी दुनिया मानसिक स्वास्थ्य संकट, सामाजिक तनाव और जीवन-शैली संबंधी चुनौतियों का सामना कर रही है। प्रतिस्पर्धा, भागदौड़ और डिजिटल निर्भरता ने जीवन में बेचैनी बढ़ाई है। ऐसे में योग व्यक्ति को भीतर से मजबूत बनाता है, आत्म-नियंत्रण, धैर्य, संयम और सजगता का विकास करता है। योग सिखाता है कि वास्तविक स्वास्थ्य रोगों की अनुपस्थिति नहीं, बल्कि शारीरिक, मानसिक और सामाजिक संतुलन है।

वर्तमान पर्यावरणीय संकट और जलवायु परिवर्तन के संदर्भ में योग का दर्शन हमें प्रकृति के साथ सामंजस्यपूर्ण जीवन जीने की प्रेरणा देता है। योग बताता है कि मनुष्य प्रकृति का अभिन्न अंग है। जब व्यक्ति भीतर संतुलन स्थापित करता है, तो वह पर्यावरण के प्रति अधिक संवेदनशील बनता है।

भारत के लिए योग केवल सांस्कृतिक विरासत नहीं, बल्कि वैश्विक नेतृत्व का महत्वपूर्ण माध्यम बन गया है। योग के माध्यम से भारत ने विश्व को स्वास्थ्य, संतुलन और आत्मिक विकास का अनूठा मार्ग प्रदान किया है। आज विश्व के अनेक देशों में योग केंद्र, शोध संस्थान और प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित हो रहे हैं—योग अब केवल भारत की धरोहर नहीं, सम्पूर्ण मानवता की साझा विरासत बन चुका है।

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस 2026 केवल उत्सव नहीं, आत्म-मंथन का भी अवसर है। यह याद दिलाता है कि स्वस्थ समाज के निर्माण के लिए संतुलित जीवन-शैली, मानसिक शांति, आत्मानुशासन और प्रकृति के साथ सामंजस्य उतना ही आवश्यक है जितनी दवाएँ और उपचार। योग का सार यही है—शरीर, मन और चेतना का अटूट संगम, जो मानवता को शांति, स्वास्थ्य और आत्मिक उन्नति का मार्ग दिखाता है।

साहित्य प्रश्नोत्तरी

1. प्रारूप संविधान में आठवीं अनुसूची में कितनी भाषाएँ थी? -१३ (बाद में संविधान सभा में इसमें संस्कृत जोड़कर इसकी संख्या १४ कर दी)
2. संविधान के किस अनुच्छेद के अनुसार १५ वर्ष के बाद अर्थात् २६ जनवरी १९६५ से हिन्दी को पूर्णतया राजभाषा के रूप में स्थापित किया जाना था? - अनुच्छेद ३४३
3. पिजिन हिन्दी के उदाहरण हैं? - बम्बई या हिन्दी, कलकत्तिया हिन्दी।
4. हिन्दी में वाच्य हैं? -३ (कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य, भाववाच्य)
5. हिन्दी के वचन हैं? -२ (एकवचन, बहुवचन)
6. हिन्दी में लिंग हैं? -२ (स्त्रीलिंग, पुल्लिंग)
7. व्याकरण के आधार पर हिन्दी शब्दों के प्रकार हैं? -८, विकारी शब्द-संज्ञा, विशेषण, क्रिया, सर्वनाम। अविकारी शब्द- क्रिया विशेषण, सम्बंधबोधक, समुच्चयबोधक, विस्मयबोधक।
8. शब्द कोटियाँ हैं? - संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, क्रिया-विशेषण (निपात, उपसर्ग, योजक)
9. व्याकरणिक कोटियाँ हैं? लिंग, वचन, पुरुष, कारक, काल, पक्ष या प्रकार, वृत्ति या अर्थ, वाच्य।
10. संविधान की आठवीं अनुसूची में कितनी भाषाओं को मान्यता प्राप्त है? -२२ असमिया, उड़िया, उर्दू, कन्नड़, काश्मीरी, गुजराती, तमिल, तेलगू, पंजाबी, मलयालम, बंग्ला, मराठी, संस्कृत, सिंधी, हिन्दी, कोंकणी, मणिपुरी, नेपाली, मैथिली, डोगरी, बोडो, संथाली।
11. उर्दू' शब्द किस भाषा का है? तुर्की (जिसका अर्थ पड़ाव, शिविर, खेमा)
12. भारोपीय परिवार की भाषा 'हित्ती' का क्षेत्र था? - बोगाजकोई (तुर्की में)
13. भारोपीय परिवार की भाषा 'तोखारी' का क्षेत्र था? - तुर्फान (मध्यएशिया)
14. निघण्टु क्या था? - वैदिक शब्दकोश
15. निरुक्त के प्रणेता थे? - यास्क मुनि
16. यास्क-प्रणीत निरुक्त के कितने खण्ड हैं? -दो (निरुक्त, निघण्टु)
17. धातुपाठ, गणपाठ, उणादिसूत्र, लिंगानुशासन किसकी रचनाएँ मानी जाती हैं? - पाणिनि
18. अष्टाध्यायी में कितने अध्याय और सूत्र हैं? -८ अध्याय, ३९८० सूत्र
19. अष्टध्यायी में माहेश्वर सूत्रों की संख्या है? - १४
20. पाणिनी ने पदों को कितने विभागों में बांटा है? -दो (सुबंत, तिड़न्त)

शब्द-युग्म
(समान-सा उच्चारण किंतु भिन्न अर्थवाले शब्द)

प्रत्येक भाषा में कुछ ऐसे शब्द भी होते हैं जो उच्चारण एवं लेखन में काफी समानता लिए हुए होते हैं किंतु थोड़ी-सी भिन्नता से भी उनके अर्थ नितांत अलग-अलग होते हैं। इस प्रकार के शब्दों के उच्चारण एवं लेखन की समानता-असमानता और अर्थ-भिन्नता के प्रति विशेष जागरूकता नहीं दिखाई जाए तो अर्थ का अनर्थ हो सकता है। इसलिए भाषा की शुद्धता की दृष्टि से इस प्रकार के शब्दों की विशेष जानकारी आवश्यक है। शब्द का अर्थ मूलतः उसके प्रयोग में निहित रहता है, अतः परीक्षा में भी शब्द के अर्थ को वाक्य में प्रयोग भगों करके स्पष्ट करना चाहिए।

शब्द	अर्थ
कलश	घड़ा
कुलिश	हीरा/वज्र
कुच	स्तन, लालची
कच	बाल, लटें
कूच	प्रस्थान
क़िला	दुर्ग
कीला	धातु की बनी कील
करी	हाथी
कीर	तोता

विलोम शब्द (Antonyms)

भाषा जीवन की अभिव्यक्ति है और जीवन द्वंद्वात्मक, अन्तर्विरोधात्मक है, इसलिए प्रत्येक भाषा में दो विपरीत अर्थों, मंतव्यों को व्यक्त करने के लिए अलग-अलग शब्दों का अस्तित्व रहता है। विपरीत भाव को व्यक्त करने के लिए ही विलोम (उल्टा) शब्दों की जानकारी आवश्यक है। हिंदी में ऐसे विलोम शब्द या तो मूल शब्द के रूप में पहले से ही विद्यमान हैं; जैसे दिन-रात, सुख-दुःख, छोटा-बड़ा आदि या फिर उपसर्ग लगाकर; जैसे-ज्ञानी-अज्ञानी, अर्थ-अनर्थ या उपसर्ग बदलकर; जैसे-सक्षम-अक्षम, अनुकूल-प्रतिकूल बनाए जाते हैं। कुछ महत्त्वपूर्ण विलोम शब्दों की सूची इस प्रकार है-

शब्द	अर्थ
आडंबर	सादगी
आरंभ	अंत. (समापन)
आडंबरमुक्त	आडंबरहीन
अभ्यंतरी	कर बाह्य
आवास	प्रवास
आलसी	कर्मठ, कर्मण्य
आस्था	अनास्था
आवृत	अनावृत
आरोह	अवरोह
आच्छादित	अनाच्छादित
आश्रित	निराश्रित
आदान	प्रदान
आतुर	अनातुर
आशा	निराशा

प्रशासनिक शब्दावली

राजकीय प्रशासन एवं अन्यत्र भी हिंदी एवं अंग्रेजी दोनों भाषाओं का चलन है इसलिए अंग्रेज़ी एवं हिंदी दोनों भाषाओं की आधारभूत पारिभाषिक शब्दावली से परिचित होना आवश्यक है। यहाँ भारत सरकार के वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा प्रकाशित विविध शब्दावलियों से मुख्य मुख्य शब्दावली दी जा रही है। यह शब्दावली ही अधिकृत है, अतः शब्दों के इसी हिंदी अनुवाद को प्रयोग में लेना चाहिए।

Reinstate = बहाल करना

Rejoinder = प्रत्युत्तर

Relapse = प्रत्यावर्तन

Relax = छूट देना

Relieve = भारमुक्त करना

Relinquished Charge = अवत्यक्त कार्यभार

Remand = वापस करना

Remarks = मंतव्य/अभ्युक्ति

Remission = माफ़ी/छूट

Remit = माफ़ करना/प्रेषण करना

Remittance = प्रेषण/प्रेषितधन

Removal = निष्कासन

Render = देना

Renovation = पुनर्नवीकरण

Repay = शोधन करना/चुकाना

Repeal = निरसन

Repeal = निरसन

Replace = प्रतिस्थापित

Report = रपद, रिपोर्ट

Reprimand = फटकार/भर्त्सना

Repugnant = विरुद्ध/प्रतिकूल

Requisite = अपेक्षित/आवश्यकता

Residuary power = अवशिष्ट अधिका

Resolution = संकल्प

Respectively = क्रमशः

Restitution = प्रत्यानयन/प्रत्यवस्थान

Restoration = पुनः स्थापना/फिर से चालू करना

Restrain = रोकना

Restricted = सीमित/प्रतिबंधित

Resume = सारवृत्त/पुनः आरम्भ करना

Resumption = पुनरारंभ

पुस्तक समीक्षा

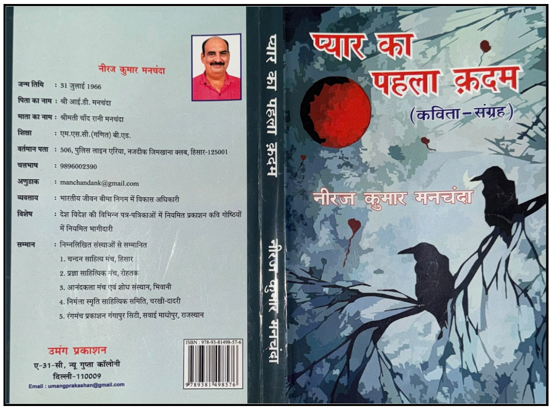

लेखक: नीरज कुमार मनचंदा
पुस्तकः “प्यार का पहला क़दम"
मूल्य: ₹295.00
पृष्ठ: 120
संस्करण : 2020
उमंग प्रकाशन ए-31-सी, न्यू गुप्ता कॉलोनी
दिल्ली-110009

श्री नीरज कुमार मनचंदा का प्रथम कविता संग्रह 'प्यार का पहला कदम' केवल शब्दों का संकलन नहीं, बल्कि एक युवा कवि की मानसिक यात्रा है। जीवन बीमा निगम में विकास अधिकारी जैसे व्यस्त पेशे में भी साहित्य के प्रति उनका समर्पण तथा 'चन्दन साहित्य मंच' के महासचिव पद तक का सफर उनकी लेखनी की गंभीरता को दर्शाता है।

संग्रह की अधिकांश रचनाएँ मुक्त छंद में हैं, जो आज के युवा पाठकों को सहजता से जोड़ती हैं। सरल, प्रवाहमयी खड़ी बोली में लिखी इन कविताओं में भाषा की बोझिलता नहीं है। कवि ने कहीं ग़ज़ल तो कहीं दोहों को आजमाया है, जो उनकी बहुमुखी प्रतिभा का परिचय देता है। प्रथम कृति होने के बावजूद इसमें अप्रौढ़ता का कोई दोष नहीं, बल्कि सरलता में गहरी अर्थवत्ता समाई है।

विषय-वस्तु की विविधता इस संग्रह की सबसे बड़ी उपलब्धि है। कवि ने सामाजिक विडंबनाओं पर करारी चोट की है – "रिश्ते अब व्यापार बन गए, रिश्ते अब बाज़ार बन गए" जैसी पंक्तियाँ आज के स्वार्थी समाज का दर्पण हैं। 'चुनाव का मौसम' वैमनस्य की राजनीति पर तीखा व्यंग्य है। प्रेम, मित्रता और अकेलेपन का चित्रण भी अत्यंत मार्मिक है – "ए दोस्त तेरा शुक्रिया, मेरी ज़िंदगी में आए" जैसी पंक्तियाँ हृदय को छू जाती हैं।

राष्ट्रीयता और कर्तव्य के प्रति कवि की चेतना स्पष्ट है – वीर जवानों को 'राष्ट्र-पुष्प' की संज्ञा देते हुए वे हिंदी भाषा के प्रति अपना अगाध प्रेम व्यक्त करते हैं: "हिंदी है अपनी पहचान, हिंदी अपने देश का मान।" जीवन-दर्शन और संघर्ष पर लिखी कविताएँ युवाओं को प्रेरणा देती हैं – "कभी न रुकना, कभी न थकना, बस चलते जाना।" आतंकवाद जैसे गंभीर विषय पर भी कवि की स्पष्ट वाणी – "आतंक को नकार दो, शांति को प्यार दो" – सिद्ध करती है कि वे केवल भावुक कवि नहीं, बल्कि विचारशील नागरिक भी हैं।

'प्यार का पहला कदम' नीरज जी के काव्य-संसार का प्रवेश-द्वार है और उनके भविष्य के रचनात्मक सफर की मजबूत नींव। यह पुस्तक पाठकों को मुस्कराना, सोचना और विसंगतियों पर व्यंग्य करना सिखाती है। नीरज जी की कलम में जो संवेदना, ऊर्जा और समाज के प्रति चिंता है, वह उन्हें निकट भविष्य में हिन्दी साहित्य के उल्लेखनीय हस्ताक्षरों में शामिल करेगी। यह संग्रह सभी साहित्यप्रेमियों और उन युवाओं के लिए अवश्य पठनीय है, जो शब्दों की ताकत पर विश्वास करते हैं।

समीक्षक
डॉ राजपाल
हिंदी-विभाग